समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Tuesday, 22 September 2026

कच्छ मे 'त्रिशूल' का गूंजता गर्जन : भारत की तीनों सेनाओं ने दिखाई ताकत, 'ब्रह्मशिरा' अभ्यास से बढ़ी युद्ध तैयारी

Publisher

Published on 10 Nov 2025

कच्छ का रण इन दिनों देशभक्ति और ताकत के अद्भुत नज़ारे से गूंज उठा। चारों ओर से रोशनी की चमक, आसमान में गूंजते धमाके और धरती पर सेना के वाहनों की गर्जना... यह सब किसी युद्ध का दृश्य नहीं था, बल्कि भारत की तीनों सेनाओं के संयुक्त युद्धाभ्यास 'त्रिशूल' का हिस्सा था। इस बड़े पैमाने के अभ्यास में थल सेना, नौसेना और वायु सेना ने एक साथ अपनी रणनीतिक क्षमताओं का शानदार प्रदर्शन किया।

'त्रिशूल' युद्धाभ्यास के अंतर्गत 'ब्रह्मशिरा' नामक इस अभ्यास का आयोजन कच्छ के रण और क्रीक सेक्टर में किया गया। इसका उद्देश्य तीनों सेनाओं के बीच समन्वय को और सशक्त बनाना और वास्तविक युद्ध परिस्थितियों में संयुक्त अभियान चलाने की तैयारी को परखना था। इस ऑपरेशन में तटरक्षक बल (Coast Guard) और सीमा सुरक्षा बल (BSF) के साथ-साथ स्थानीय प्रशासन की भी सक्रिय भागीदारी रही।

अभ्यास के दौरान जमीन से लेकर समुद्र और आसमान तक, हर दिशा में भारत की सैन्य शक्ति का नजारा देखने को मिला। थल सेना ने उन्नत हथियारों, टैंक और बख्तरबंद वाहनों के साथ अपनी सामरिक तैयारी दिखाई, जबकि भारतीय नौसेना ने समुद्र में निगरानी और दुश्मन के जहाजों को रोकने की क्षमता का प्रदर्शन किया। वहीं, भारतीय वायु सेना ने अत्याधुनिक फाइटर जेट्स और हेलीकॉप्टरों से आसमान में शक्ति प्रदर्शन करते हुए लक्ष्य पर सटीक वार करने की क्षमता का परिचय दिया।

'ब्रह्मशिरा' अभ्यास का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि तीनों सेनाएं किसी भी परिस्थिति में एकजुट होकर दुश्मन का मुकाबला कर सकें। इस दौरान वास्तविक युद्ध जैसी परिस्थितियों में सेनाओं ने संयुक्त मिशन चलाए, जिनमें दुश्मन के ठिकानों पर हमले, आपातकालीन बचाव कार्य, और तटीय क्षेत्रों की रक्षा जैसी जटिल परिस्थितियों से निपटने का प्रशिक्षण शामिल था।

रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि कच्छ जैसा इलाका, जो समुद्र और मरुस्थल दोनों की सीमाओं से जुड़ा है, सामरिक दृष्टि से बेहद

महत्वपूर्ण है। ऐसे में इस क्षेत्र में 'त्रिशूल' जैसे संयुक्त अभ्यास भारत की सीमाओं को सुरक्षित रखने और तटीय रक्षा तैयारियों को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

भारतीय सेना के प्रवक्ता ने बताया कि यह अभ्यास "सहयोग और समन्वय" की भावना को मजबूत करता है। उन्होंने कहा कि बदलते वैश्विक और क्षेत्रीय परिदृश्य में भारत को अपनी रक्षा रणनीति को निरंतर अद्यतन रखना होगा और इस प्रकार के संयुक्त अभ्यास उसी दिशा में एक निर्णायक प्रयास हैं।

अभ्यास में आधुनिक तकनीकों जैसे ड्रोन सर्विलांस, सैटेलाइट कम्युनिकेशन, और इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर सिस्टम का भी उपयोग किया गया। इससे यह स्पष्ट संदेश गया कि भारत न केवल पारंपरिक युद्ध कौशल में निपुण है बल्कि आधुनिक तकनीक के क्षेत्र में भी तेजी से आगे बढ़ रहा है।

स्थानीय प्रशासन और नागरिक अधिकारियों की भागीदारी ने इस अभ्यास को और भी विशेष बना दिया। आपदा प्रबंधन, राहत कार्य और नागरिक सुरक्षा के विभिन्न अभ्यासों को भी इसमें शामिल किया गया, ताकि आपात स्थिति में नागरिक और सेना एक साथ मिलकर काम कर सकें।

कच्छ में आयोजित यह अभ्यास इस बात का प्रतीक है कि भारत किसी भी खतरे से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार है। 'त्रिशूल' युद्धाभ्यास ने न केवल तीनों सेनाओं की क्षमताओं को परखा बल्कि यह भी दिखाया कि भारत का रक्षा तंत्र अब पहले से अधिक संगठित, मजबूत और आधुनिक हो चुका है।

'ब्रह्मशिरा' जैसे सैन्य अभ्यास भारत की सुरक्षा नीति के प्रति प्रतिबद्धता का जीवंत उदाहरण हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत न केवल अपनी सीमाओं की रक्षा के लिए तत्पर है बल्कि किसी भी आपात स्थिति में त्वरित और प्रभावी कार्रवाई करने में सक्षम भी है।

कुल मिलाकर, कच्छ के रण में हुई इस अद्भुत सैन्य कवायद ने यह संदेश दिया कि भारत की सेनाएं जब एकजुट होती हैं, तो देश की सीमाएं और भी सुरक्षित हो जाती हैं — और दुनिया देखती है 'त्रिशूल' की असली शक्ति।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.